पर्यावरण अध्ययन : सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण

कमल महेन्द्रू



शिक्षकों के बारे में समझ, बच्चों और शिक्षा के प्रति उनका नज़रिया और इनसे संबंधित तरीकों से उभरी प्रक्रिया और संरचनाओं द्वारा ही शिक्षक प्रशिक्षण होना चाहिए। शिक्षकों की मौजूदा समझ यह है कि सारा ज्ञान उनके पास अथवा किताबों में है और वे इस ज्ञान को बच्चों के जानकारी देने के वाहक हैं। इसी आधार पर अध्यापक शिक्षा को भी प्रतिपादित किया गया है।

कक्षा में शिक्षक रचनात्मक हो या कुछ जोड़ें, इस अपेक्षा में भी कमी आई है और इसलिए अब शिक्षक प्रशिक्षण में भी बदलाव आया है। अब इनका प्रमुख मुद्दा ऐसे तरीक़ों और तकनीकों का चयन हो गया है, जिनके द्वारा पाठ्यपुस्तक की जानकारी को आसानी से बच्चों में बांट दिया जाए। अब यह सोच काम नहीं कर सकती।

हाल के कुछ सालों में लगने लगा है कि शिक्षकों का स्तर गिरा है। सम्भवतः इसका कारण, बड़ी संख्या में अध्यापकों की आवश्यकता और यह सोच है कि अब कोई भी शिक्षक बन सकता है। शिक्षकों के स्तर में गिरावट से बहुत से लोगों को पाठ्यपुस्तकों पर अधिक ज़ोर देने की ज़रूरत महसूस हुई है। यह लगने लगा कि अध्यापकों से ज़्यादा पाठ्यपुस्तकों को महत्त्व देना चाहिए।

कक्षा में शिक्षक रचनात्मक हो या कुछ जोड़े, इस अपेक्षा में भी कमी आई है और इसलिए अब शिक्षक प्रशिक्षण में भी बदलाव आया है। अब इनका प्रमुख मुद्दा ऐसे तरीकों और तकनीकों का चयन हो गया है जिनके द्वारा

पाठ्यपुस्तक की जानकारी को आसानी से बच्चों में बांट दिया जाए। अब यह सोच काम नहीं कर सकती। हमारी अपेक्षा शिक्षक से यह है कि उसे इस सोच से ऊपर उठना होगा कि उसका काम केवल पाठ्यपुस्तकों की मदद से ज्ञान/जानकारी को बांटना है। जिस तरह की पर्यावरण अध्ययन शिक्षा की हम बात कर रहे हैं, अब एक बिलकुल नए तरीक़े से शिक्षण की ज़रूरत है। कक्षा में गतिविधियां, बच्चों को अपनी समझ को प्रस्तुत करने में प्रोत्साहित करना और अपने अनुभवों द्वारा कक्षा में अवधारणाओं का विकास करना, इस प्रक्रिया में शामिल होंगे। अपेक्षा यह भी है कि सीखने–सिखाने की इस प्रक्रिया का केन्द्र बच्चे हों। परन्तु इस कार्यप्रणाली को अपनाने में कई बाधाएं हैं।

प्रमुख बाधाएं

1. शिक्षा की जिस अवधारणा के साथ शिक्षक स्कूल आते हैं, उसमें गहन बदलाव लाना होगा। कक्षा में अपनी और पाठ्यपुस्तक की भूमिका को लेकर उनके जो विचार हैं, वह किसी भी नई विधि को अपनाने में एक बाधा है। इन रोड़ों को हिलाने और हटाने की ज़रूरत है, परन्तु यह बदलाव अंदर से नहीं आ सकता।

2. इस नई पद्धति को अपनाने में, शिक्षक में विषय की कहीं बेहतर समझ और बहुत सारी जानकारी की ज़रूरत है। पर इनसे कहीं ज़्यादा ज़रूरत है शिक्षक में व्यवहारिक कौशल और विश्वास की जिससे वह किसी भी मुश्किल परिस्थिति का सामना कर पाए। हमारा अनुभव है कि विषय संबंधी अवधारणाओं का शिक्षकों में विकास करने के लिए नई प्रणालियों की आवश्यकता है।

3. हमें ज्ञान और जानकारी को लेकर बहुत–सी ग़लत धारणाओं को तोड़ना होगा। ऐसा मानना है कि विज्ञान के पास हर प्रश्न का उत्तर है और यह उत्तर उत्तम, अचूक और स्थायी है। सही जानकारी, विज्ञान की प्रक्रिया और विज्ञान का अर्थ और ऐसे बहुत से विषयों के बारे में गलत धारणाएं बनी हुई हैं। बहुत से छद्म तरीकों, जिनमें छद्म वैज्ञानिक तरीक़े भी शामिल हैं, ने एक ऐसी परत बना दी है जो समझ विकसित करने में बाधक है। इन सभी से किसी न किसी तरह हमें जूझना है।

4. अनुशासन और अनुशासनहीनता की धारणा, बच्चों को कैसे संभालें, शोर क्या है और बच्चों के बीच सार्थक अंतःक्रिया क्या है, क्या करें कि बच्चे सवाल करें और किस प्रकार से इससे उभरी अस्तव्यस्तता और कोलाहल को संभालें। शिक्षकों की सीखने की गति और गुणवत्ता तथा सीखने की स्वतंत्रता के बीच संबंध और अनुशासन की नई परिभाषा को पहचानना होगा।

5. परीक्षाएं और मूल्यांकन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में प्रमुख बाधा है। शिक्षकों को इनके बारे में अपने दकियानूसी नज़रिए से हिलना होगा। उन्हें अपने सवालों को जांचना सीखना होगा और यदि उनके सवाल गलत हों तो यह स्वीकारना होगा। मूल्यांकन के कारणों को समझना और नतीज़ों को अपने कार्य के प्रति फीडबैक के रूप में लेना भी उन्हें आना चाहिए।

6. एक आदर्श स्थिति में जिन मूल्यों को प्रशिक्षण में विकसित करना है, उनके प्रशिक्षण की असली परिस्थितियां में विरोधाभास भी एक बाधा है। जो समाजशास्त्रीय और शिक्षाशास्त्रीय आदर्श पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम के आधार हैं, वह प्रशिक्षण की कार्यप्रणाली में झलकने चाहिए। प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए ज़रूरी है कि जो भी नवाचार अपनाया गया है उसे शिक्षकों पर थोपा नहीं जाए। इसी स्थिति में स्कूल में कुछ बदलाव संभव है।

7. प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षक के प्रति रवैया भी एक अवरोध है। प्रशिक्षकों को विशेषज्ञ समझा जाता है और उन्हें वही आदर दिया जाता है, जिसकी अपेक्षा बच्चों से होती है। उन्हें एक ऐसे चरण में लाने की आवश्यकता है जहां वे विशेषज्ञ के कहे पर भी सवाल उठा सकें। पूछने और स्कूल पर टिप्पणी करने की क्षमता का विकास, उन्हें अपने में विश्वास दिलाने के लिए ज़रूरी है।

इन बाधाओं को हटाने में हम क्या करें? मैं यहां कुछ आदर्श प्रस्तुत कर रहा हूं जो हमारे प्रशिक्षणों की नींव हैं–

(अ) कक्षा प्रक्रियाओं में शिक्षकों से जो अपेक्षाएं हैं, उनका पालन संदर्भ समूह द्वारा किया जाय। उनके प्रशिक्षण में भी वही वातावरण, वही प्रक्रिया और वही व्यवहार दिखना चाहिए जो शिक्षक से कक्षा–कक्ष में अपेक्षित है। यह संदर्भ समूह की ज़िम्मेदारी है कि इन प्रक्रियाओं और मूल्यों की समझ शिक्षक तक पहुंचायें और वे इन्हें अपनाएं। शिक्षक अपने कक्षा–कक्ष में बच्चों के साथ गतिविधियों का उपयोग तभी करेंगे जब ये उनके प्रशिक्षणों का एक हिस्सा हो।

(ब) हमारे अनुभव में सबसे अच्छे प्रशिक्षक स्वयं शिक्षक होते हैं, पर बड़ी संख्या में ऐसे स्रोत शिक्षक तैयार करें कैसे? हम नियमित रूप से शिक्षकों से स्रोत व्यक्तियों का विकास कर रहे हैं। इससे उनके काम को एक स्वीकृति और पहचान मिलती है और आगे के लिए प्रोत्साहन भी।

प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षक के प्रति रवैया भी एक अवरोध है। प्रशिक्षकों को विशेषज्ञ समझा जाता है और उन्हें वही आदर दिया जाता है, जिसकी अपेक्षा बच्चों से होती है। उन्हें एक ऐसे चरण में लाने की आवश्यकता है जहां वे विशेषज्ञ के कहे पर भी सवाल उठा सकें।

(स) प्रशिक्षणों के पश्चात् नियमित रूप से बैठकें होती हैं जो एक प्रकार का निरंतर प्रशिक्षण है। लेकिन संपूर्ण उन्मुखीकरण के लिए, प्रशिक्षण और बैठकें काफ़ी नहीं है। यह सोचने की आवश्यकता है कि उन्मुखीकरण के लिए आगे क्या करना चाहिए और उनका स्वरूप क्या होगा।

(द) सेवाकालीन प्रशिक्षणों में कुछ नए विचार और नवाचार हुए हैं। इन्हें सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा में अपनाने और सम्मिलित करने पर भी विचार करना होगा।

जब हम शिक्षक उन्मुखीकरण की बात करते हैं तब हम शिक्षक को अधिकार देने के बारे में, पाठ्यक्रम की समझ, उसकी समीक्षा और उसमें बदलाव करने के बारे में भी सोचें। दिल्ली में एक छोटे समूह ने पर्यावरण अध्ययन पाठ्यचर्या की समीक्षा और अपनी टिप्पणियों को सीबीएसई बोर्ड के साथ बांटा। कई महीनों के प्रयासों के बाद सीबीएसई के साथ हमारी बैठक बुलाई गई। पर सीबीएसई ने तो सामग्री पर दी गई टिप्पणियों को पढ़ा भी नहीं था। उनका यही कहना था कि सामग्री के पीछे जो सोच, समझ और विचार हैं उन्हें हम समझे ही नहीं। यह बात बताती है कि हमें प्रशिक्षण की आवश्यकता है। एक बार बात हम समझ लें कि क्या कहा जा रहा है तो हमें पाठ्यचर्या से कोई शिकायत नहीं रहेगी।

शिक्षकों की सहभागिता अहम है और उनकी प्रशासनिक ढांचे में भूमिका भी बहुत अहम है। उन्हें सम्मान और अवसर देना ज़रूरी है। उन्हें ज़िला शिक्षा अधिकारी और अन्य अधिकारियों आदि के साथ स्कूल के बारे में बातचीत करना आना चाहिए और विश्वास के साथ उनके सवालों का जवाब भी देना चाहिए।

शिक्षक प्रशिक्षण से क्या फ़ायदा है? जब हम शिक्षकों को इतना प्रशिक्षण देते हैं, उन्हें प्रयोगों और गतिविधियों से अवगत कराते हैं, पर वे अब भी विज्ञान को बिना प्रयोग, बिना गतिविधि के पढ़ाते हैं।

यह हमारी एक आम समस्या है। हम जो और जहां कर सकते हैं, उसका

प्रयास करें। इसमें हम 100 प्रतिशत नतीज़े निकलने की अपेक्षा नहीं करें। हमें लगता है कि शिक्षक की मदद करना और स्कूल में जो होना चाहिए उसमें क्या कठिनाईयां हैं, यह समझना ही हमारी भूमिका है।

मूल बात यह है कि प्रशिक्षक ''मैं सब जानता हूं'' की मुद्रा न बनाएं। ऐसे हालात हों जो दर्शाएं कि मनुष्य का ज्ञान और उसकी समझ सीमित है और विज्ञान केवल सवालों के जवाब देने का प्रयास करता है और सभी जवाब पक्के और सटीक नहीं हैं। चर्चाओं से हम सब कुछ–न–कुछ सीखते हैं और किसी भी अवधारणा को सटीक और पैना करने की गुंजाइश हमेशा होती है। यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो हम शिक्षकों के लिए भी ज्ञान और सीखने की अपनी समझ पर पुनः विचार की राह खोलते हैं।

शिक्षण प्रशिक्षण एक बहुआयामी प्रक्रिया भी है जिसमें बच्चे को समझना, पाठ्यचर्या की समझ और कक्षा–कक्ष में उसकी कार्यवाही भी शामिल है। साथ ही, विषय की प्रक्रिया और अवधारणा, दोनों ही स्तर पर अध्यापक शिक्षक की समझ ज़रूरी है। शिक्षक प्रशिक्षण में ज़ोर देना चाहिए कि शिक्षक का विकास एक व्यक्ति, एक पेशेवर और एक सामाजिक कर्मी के रूप में हो।

– शिक्षा के सभी पहलुओं में बदलाव लाने के आंदोलन में शिक्षक की अहम भूमिका है।

– यदि उन्हें अवसर और सहायता दी जाए, तो शिक्षक अपनी रचनात्मकता और पथप्रदर्शकता से हमें चौंका सकते हैं।

– हमें शिक्षा के हर पहलू में जिसमें निर्णय लेना शामिल है, शिक्षकों की सहभागिता और सक्रिय योगदान प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

– शिक्षक को बच्चे के सीखने में पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाने में मदद चाहिए।

यह हमारी एक आम समस्या है। हम जो और जहां कर सकते हैं, उसका प्रयास करें। इसमें हम 100 प्रतिशत नतीज़े निकलने की अपेक्षा नहीं करें। हमें लगता है कि शिक्षक की मदद करना और स्कूल में जो होना चाहिए उसमें क्या कठिनाईयां हैं, यह समझना ही हमारी भूमिका है।

प्रशिक्षण में भागीदारी और संवाद के अवसर हों जिनमें प्रशिक्षण मॉडयूल और अधिक प्रभावी बनें। आरम्भिक प्रशिक्षण के बाद लगातार प्रशिक्षण होता है। स्कूल प्रशिक्षण को स्कूल निरीक्षण के साथ जोड़ा गया है। यह बीआरसी, सीआरसी और स्रोत समूह के व्यक्ति करते हैं।

यह शिक्षक प्रशिक्षण का संपूर्ण दृष्टिकोण है, जिसमें अवधारणा की समझ और निपुणता के विकास के साथ व्यक्तिगत बदलाव भी शामिल है। प्रशिक्षण और कक्षा–कक्ष में पढ़ाने को जोड़ने पर ज़ोर देने के लिए प्रशिक्षकों पर निर्भरता कम है और प्रशिक्षण को बेहतर बनाने की जिम्मेदारी शिक्षकों की है।

प्रशिक्षण ऐच्छिक है क्योंकि इनमें आने के लिए शिक्षकों को बाध्य नहीं, प्रोत्साहित किया जाता है। अधिकतर प्रशिक्षण आवासीय हैं। प्रशिक्षण के दौरान और इनके बाद शिक्षकों को स्रोत व्यक्ति बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, क्योंकि प्रशिक्षणों से बेहतर वह अपने गांव, अपने बच्चों को उनकी बोल–चाल को समझते हैं। अध्यापक शिक्षक से अपेक्षा है कि वे शिक्षकों में सीखने के प्रति उत्सुकता जगा पाए। अध्यापक शिक्षक को शिक्षक के पूर्व ज्ञान और अनुभव के आधार पर नई अवधारणाएं विकसित करना आता है। प्रशिक्षण का उद्देश्य है कि शिक्षक का उन्मुखीकरण कर, उनमें अपने अनुभव से ज्ञान निर्माण करने की क्षमता बनाई जाए।

कमल महेन्द्रू – विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र में कार्यरत हैं।